NEHRU
BAL PUSTAKALAYA
मोरू
मुल्कराज आनंद
रूपर्ट हेलर

होली
मुल्कराज आनंद
चित्रकार
रूपर्ट हेलर
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,

मैं मोरा हूँ, जंगल का बालक।
मेरे पिता ने मेरा नाम रखा था पेची।
मेरा जन्म हुआ तो मेरी माँ बहुत खुश हुई।
उसने चिंघाड़ कर सारे जंगल को
मेरे पैदा होने की खबर दी।
मैं बड़ा होने लगा तो
माँ मेरी गुरु बन गयी।
उसने मुझको कई बातें सिखायीं।
पहला सबक चूहों के बारे में था।
हम मुँह धो रहे थे तो माँ ने एक चूहे को देखा।
वह चिल्लायी,
"पेची, होशियार!
कहीं यह तुम्हारी कोमल नाक के अंदर न घुस जाय।
इसके पैर बड़े खुरदरे हैं।"
चूहे को मेरी ओर आते देख वह फिर चिल्लायी,
"भागो! बचो!"

मैंने उसको देख लिया और वहाँ से खिसक गया।
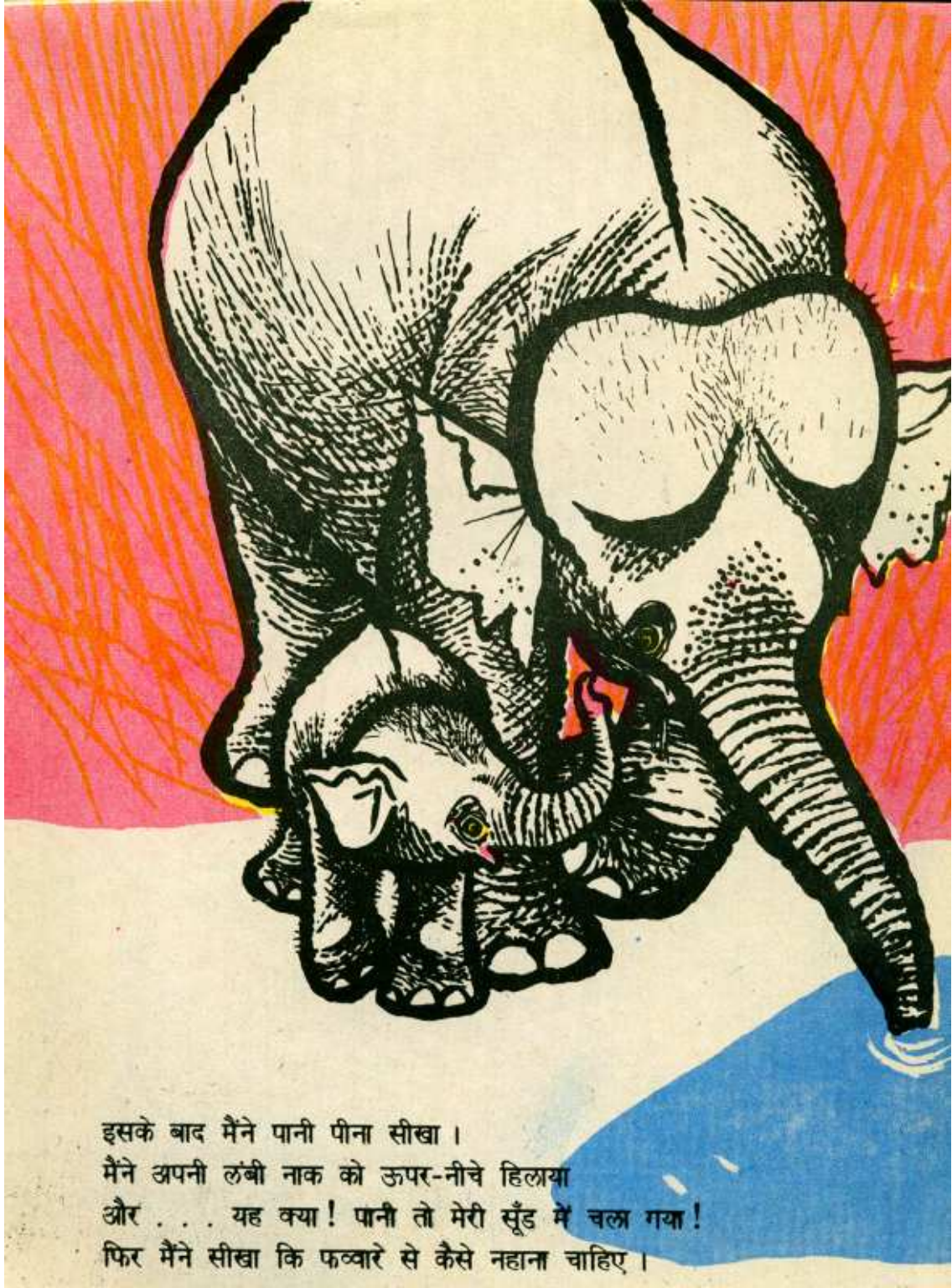
इसके बाद मैंने पानी पीना सीखा।
मैंने अपनी लंबी नाक को ऊपर-नीचे हिलाया
और . . . यह क्या! पानी तो मेरी सूँड में चला गया!
फिर मैंने सीखा कि फव्वारे से कैसे नहाना चाहिए।
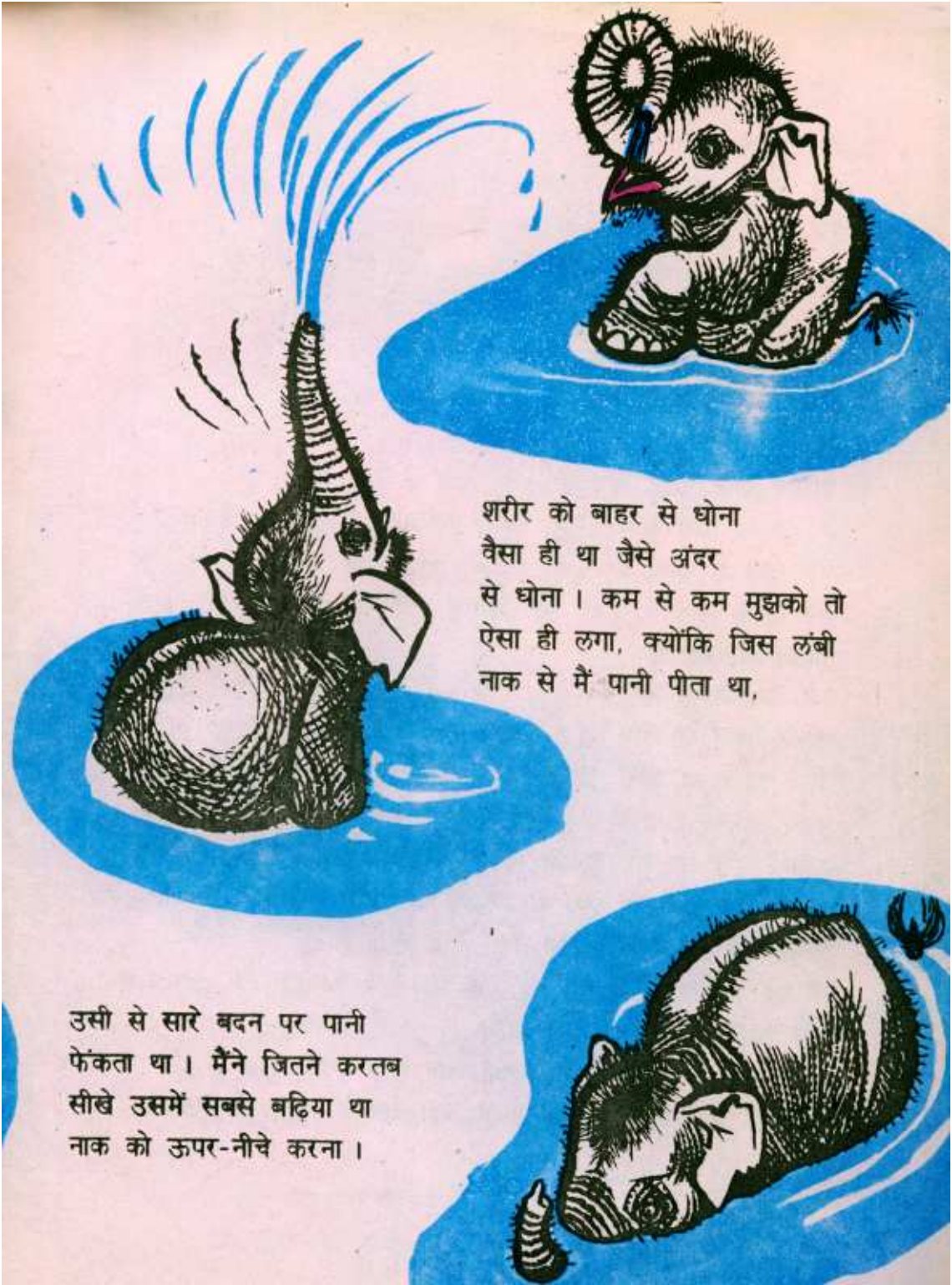
शरीर को बाहर से धोना
वैसा ही था जैसे अंदर
से धोना। कम से कम मुझको तो
ऐसा ही लगा, क्योंकि जिस लंबी
नाक से मैं पानी पीता था,

उसी से सारे बदन पर पानी
फेंकता था। मैंने जितने करतब
सीखे उसमें सबसे बढ़िया था
नाक को ऊपर-नीचे करना।

फिर सबसे कठिन सबक आया।
मैंने उन लोगों के बारे में सुना जो हाथी के शिकारी कहलाते हैं।
तुम जानते हो कि हाथी के शिकारी जंगल में क्या करते हैं?
वे छोटे-छोटे, बच्चे हाथियों को पकड़ लेते हैं,
और उन्हें माँ-बाप से बहुत दूर ले जाते हैं।
जंगल में हवा चलती है तो हम हाथी लोग
इन राक्षसों की गंध पा लेते हैं,
और तब हम भाग कर छिप जाते हैं।
लेकिन अगर हवा नहीं चल रही होती है तो
ये चालाक लोग चकमा देकर बच्चे हाथियों को पकड़ ले जाते हैं।
एक दिन मैं अपने माँ-बाप के साथ खाना खा रहा था।
मैंने किसी डाल के टूटने की आवाज़ सुनी तो सिर उठा कर देखा।
जानते हो क्या था?
एक अजीब-सा जीव!
उसके सिर्फ दो टाँगें थीं। सामने के पंजे हवा में उठे हुए थे।
जान पड़ता था मानो उसने अपनी सूँड उतार कर हाथ में ले रखी हो।
उसके उठे हुए पंजों में लोहे की लंबी नली-सी कोई चीज़ थी।
मुझको लगा कि वह मुझको मारने आ रहा है।
उसके चेहरे का रंग वैसा ही गुलाबी था जैसे मेरे पिता की जीभ का!
उसके सिर पर टोकरी-जैसी कोई चीज़ थी।
मैं यह देखकर हैरान रह गया कि वह जिस जानवर पर सवार था
वह हमारी ही बिरादरी का था!
"हमारा भाई इसकी सवारी क्यों बना है?" मैंने पूछा।
"अपनी जाति को धोखा देनेवाला, जातिद्रोही!" पिता ने गुस्से में कहा।
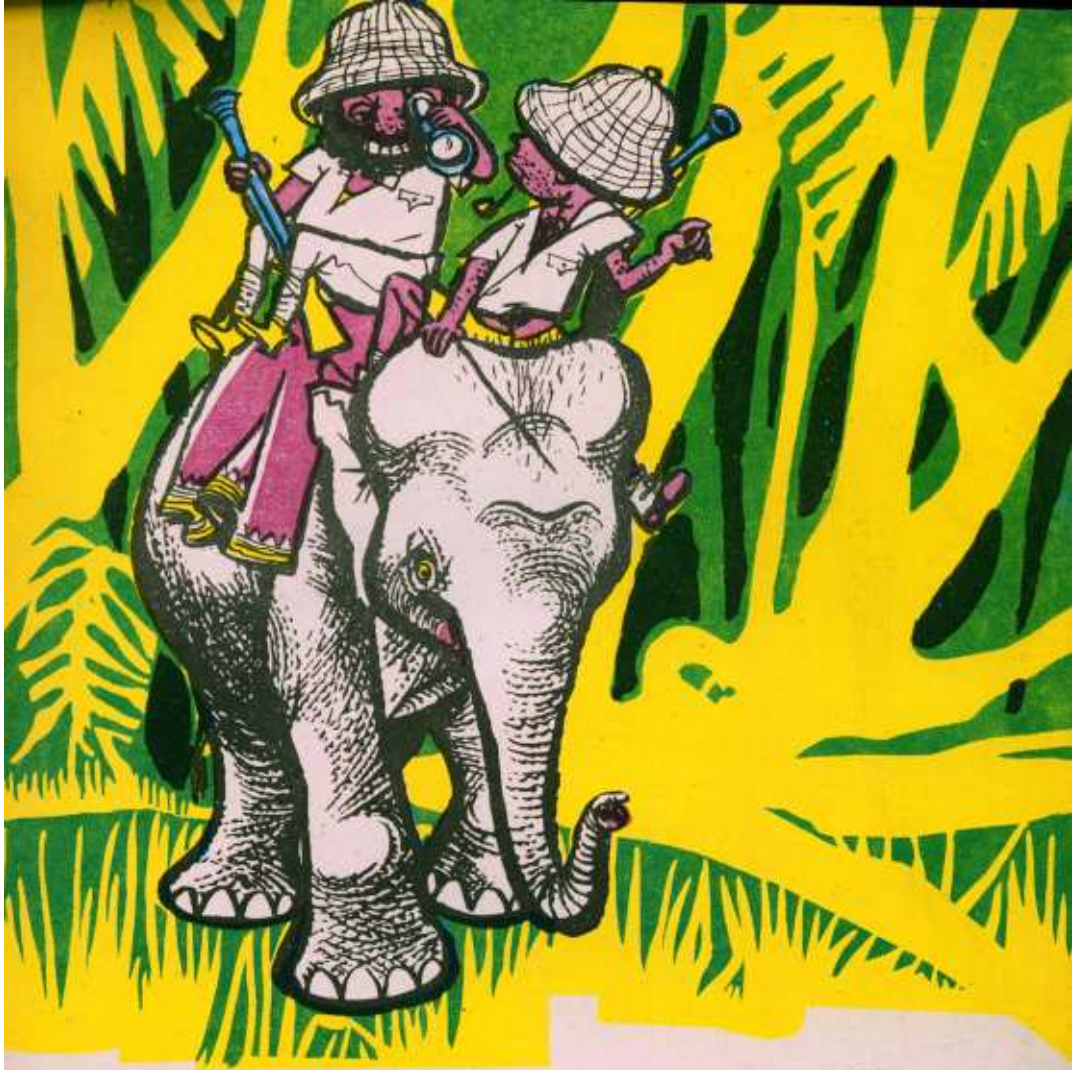
"यह हाथी का शिकारी है," माँ ने कहा।
"चलो, जल्दी चलें।"
चिल्लाकर, मैं जितनी तेज़ भाग सकता था,
भागने लगा।
लेकिन मैं दो पेड़ों के बीच जाकर फँस गया।
खाना जो इतना डट कर खाया था।
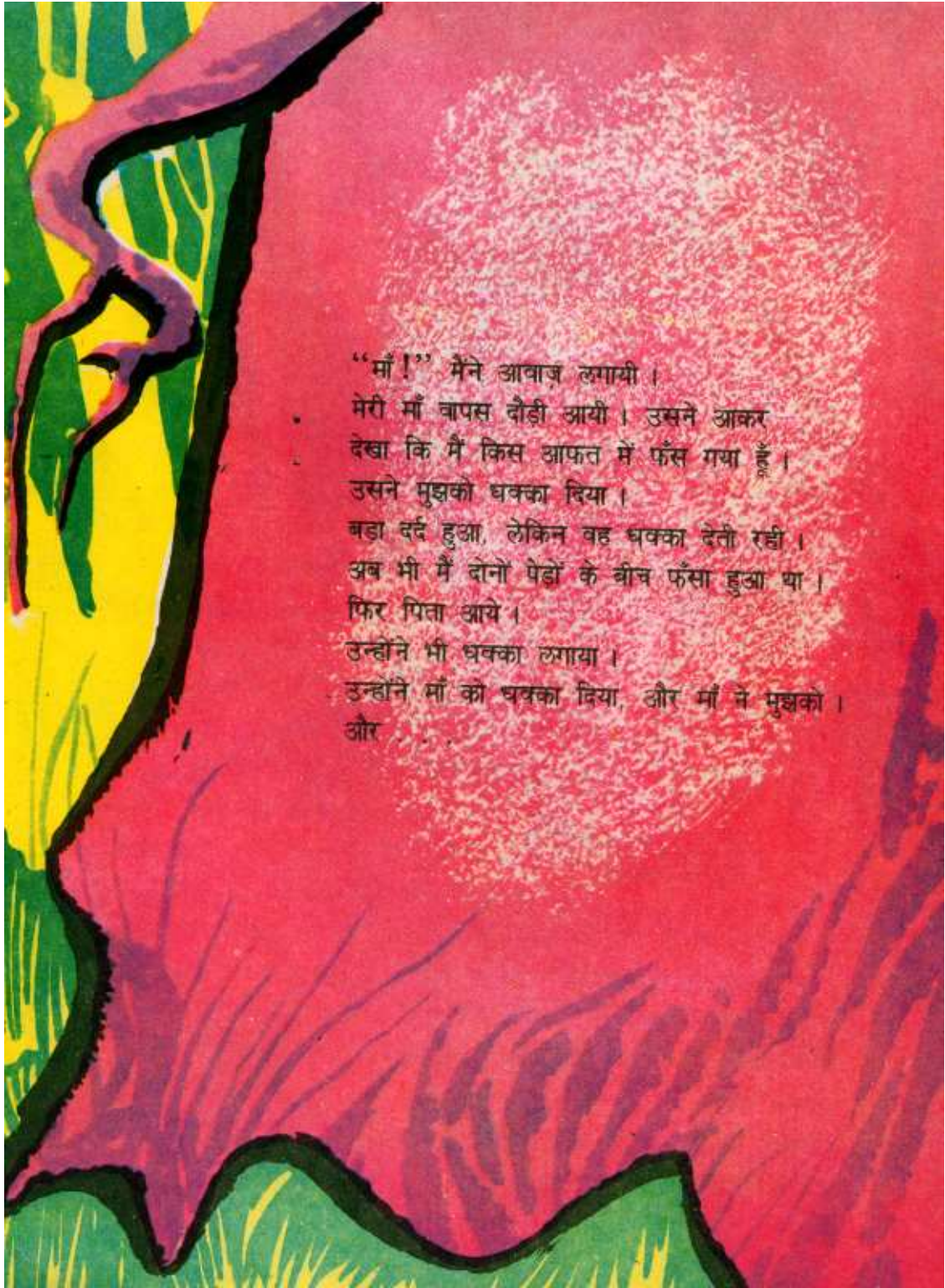
"माँ!" मैंने आवाज़ लगायी।
मेरी माँ वापस दौड़ी आयी। उसने आकर
देखा कि मैं किस आफत में फँस गया हूँ।
उसने मुझको धक्का दिया।
बड़ा दर्द हुआ, लेकिन वह धक्का देती रही।
अब भी मैं दोनों पेड़ों के बीच फँसा हुआ था।
फिर पिता आये।
उन्होंने भी धक्का लगाया।
उन्होंने माँ को धक्का दिया, और माँ ने मुझको।
और . . .

मैं एकदम जो निकला तो सूँड के बल गिर पड़ा,
फिर लुढ़का और उठकर तेज़ी से दौड़ने लगा।
माँ मेरे पीछे-पीछे थी और बड़े प्यार से मेरा हौसला बढ़ा रही थी।
"शाबाश बेटे! और तेज़! शाबाश!"
लेकिन मुझको पिता के पैरों की आवाज़ नहीं सुनायी पड़ रही थी।
मैं मुड़कर पीछे देखना चाहता था।
लेकिन माँ आगे बढ़ने को उकसाती रही।
मैं आगे बढ़ता गया,
लेकिन कान पीछे लगे थे।

आगे-आगे मेरे चाचा-चाचियाँ और मामा-मामियाँ भागे जा रहे थे।
उन्होंने झाड़ियों और पेड़ों को गिरा दिया था।
इससे मेरा रास्ता साफ़ हो गया था।
मैं दौड़ता गया, दौड़ता गया।
कुछ देर बाद मैंने देखा कि मैं तो बिल्कुल अकेला हूँ।
मेरी माँ भी नहीं थी वहाँ।
मैंने पीछे मुड़कर देखा कि वह पीछे खड़ी है और सिर घुमा-घुमाकर
पिता जी का रास्ता देख रही हैं।
फिर बड़ी भयानक बात हुई।
हवा में दनदनाती कोई चीज़ आयी।
मैं डर से काँपता खड़ा रहा।
जिसका डर था वही हुआ।
उस आदमी ने लोहे की उस नली से मेरे पिता की छाती में
गोली दाग दी थी।
फिर मैंने उनको लड़खड़ाकर झाड़ी में गिरते देखा।
मैंने दो बार उनको चिंघाड़ते सुना।
फिर वह बेदम होकर गिर पड़े।
मेरी माँ चीख पड़ी।
मैं रोना चाहता था लेकिन मुँह से आवाज़ ही नहीं निकली।
शायद मैं बहुत ही डर गया था।
"माँ," मैंने चिल्लाकर पुकारा।
सुनकर माँ मेरी ओर आयी।
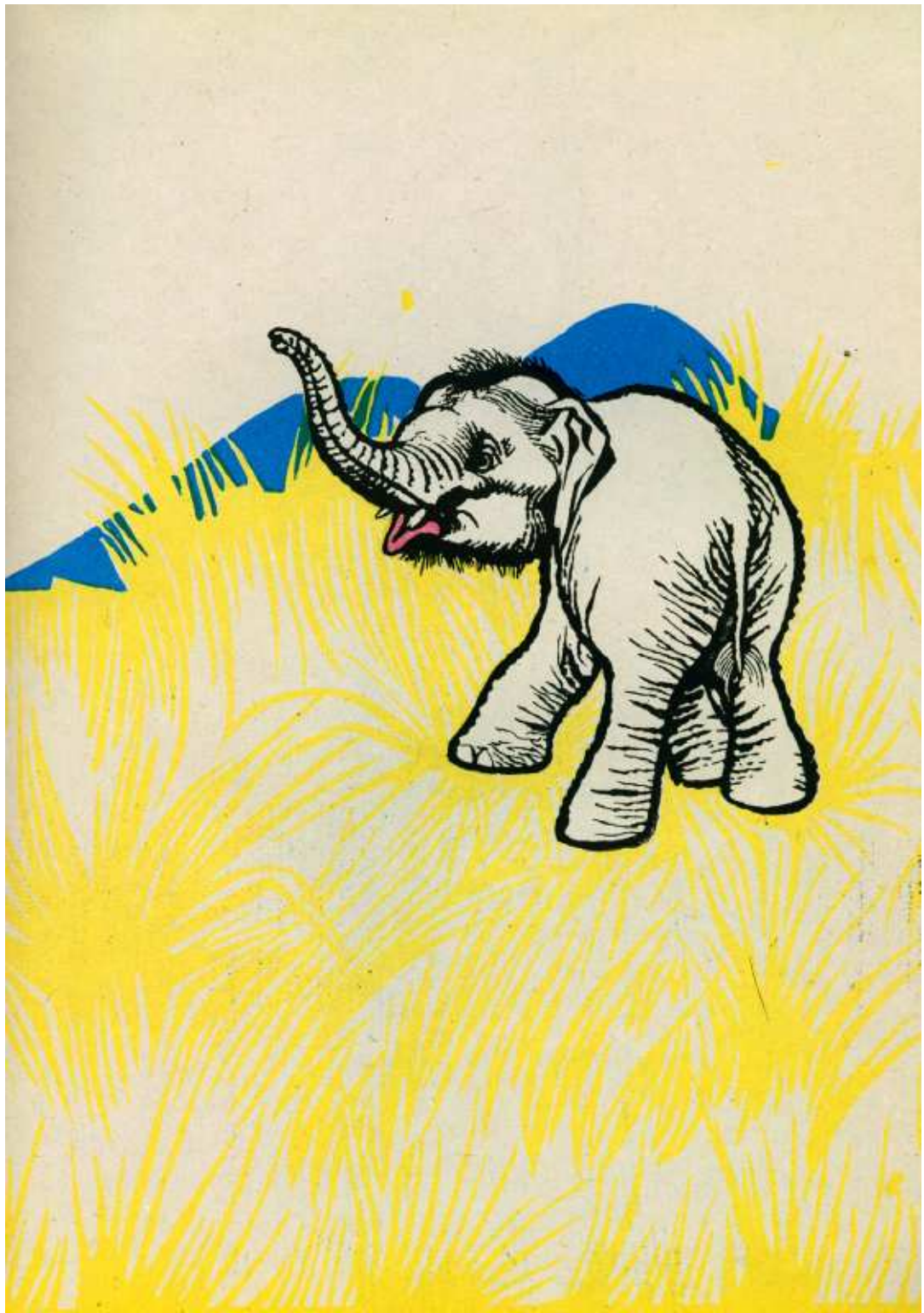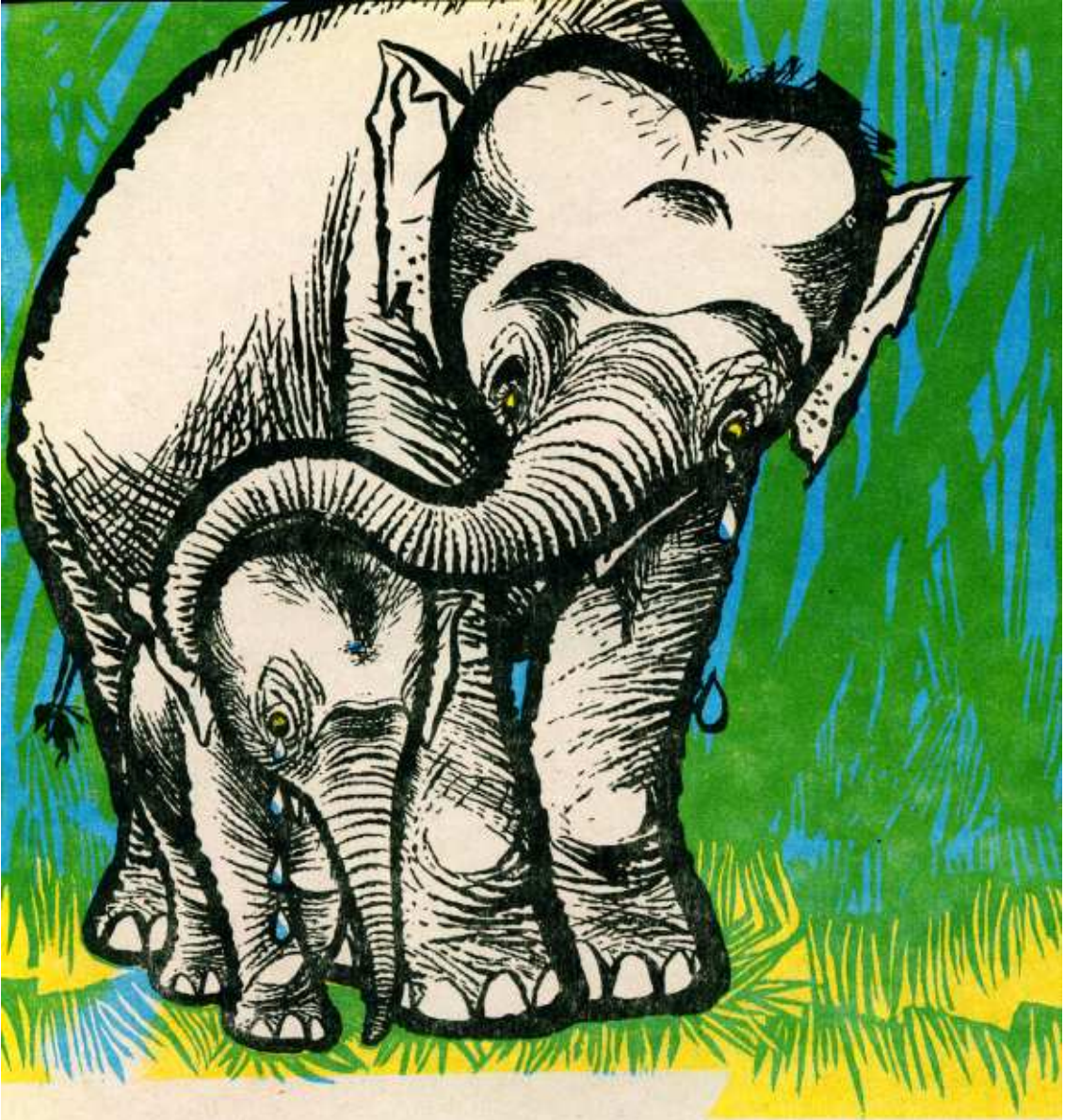
उसने अपनी लंबी नाक से मेरा सिर सहलाया ।
फिर उसने मुझको प्यार करके कहा, "मोरा, मेरे बेटे,
तुम्हारे पिता मर गये ।
चलो हम लोग यहाँ से भाग चलें । नहीं तो . . . ।"
उसी समय मैंने देखा कि उस आदमी ने धुआँ निकलती नली को झुका लिया
और उस जातिद्रोही पालतू हाथी को आगे हाँकने लगा ।

मैंने उसको कहते सुना, "अगर इस हथिनी को और उसके बच्चे को जिंदा पकड़ ले जा सकें तो मुँहमाँगे दाम मिलेंगे।"
हम किसी तरह जान बचाकर भागे, आगे-आगे मैं और पीछे माँ।
इस बार तो हमने जान बचा ली थी।
भागते-भागते हम एक झील के किनारे पहुँचे जहाँ खूब ऊँची-ऊँची घास उगी थी। मुझको खूब भूख लगी थी। छक कर घास खायी।
लेकिन मेरी माँ ने तीन दिन तक खाना नहीं छुआ।
वह अपनी सूँड से मुझको कसकर पकड़े रही और आँसू बहाती रही।
मेरी आँखों से भी आँसू गिरने लगे।
पेट में न जाने कैसी बेचैनी-सी होने लगी।
और तब माँ ने मुझको बताना शुरू किया कि शिकारी नाम का दुष्ट जीव कितना बेरहम होता है।
माँ ने मुझको गाँवों और शहरों में आदमियों के साथ रहनेवाले हाथियों के बारे में बताया।
उसने बताया कि ये हाथी आदमियों के गुलाम बन जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं।
उसने मुझको बताया कि अपनी देखभाल कैसे करनी चाहिए।
सुनकर भी न सुनना, देखकर भी न देखना।
सिर्फ़ अपनी लंबी नाक से मीलों दूर तक सूँघना और सोचना।
माँ ने बताया कि हाथी सारी दुनिया में अपनी बुद्धि के लिए मशहूर हैं।
उसने समझाया कि मुझे होशियार बनना चाहिए, अपने से जो कमजोर हों उनकी मदद करनी चाहिए। दिल का मजबूत होना चाहिए, और अपना खाना खुद जुटाना चाहिए।
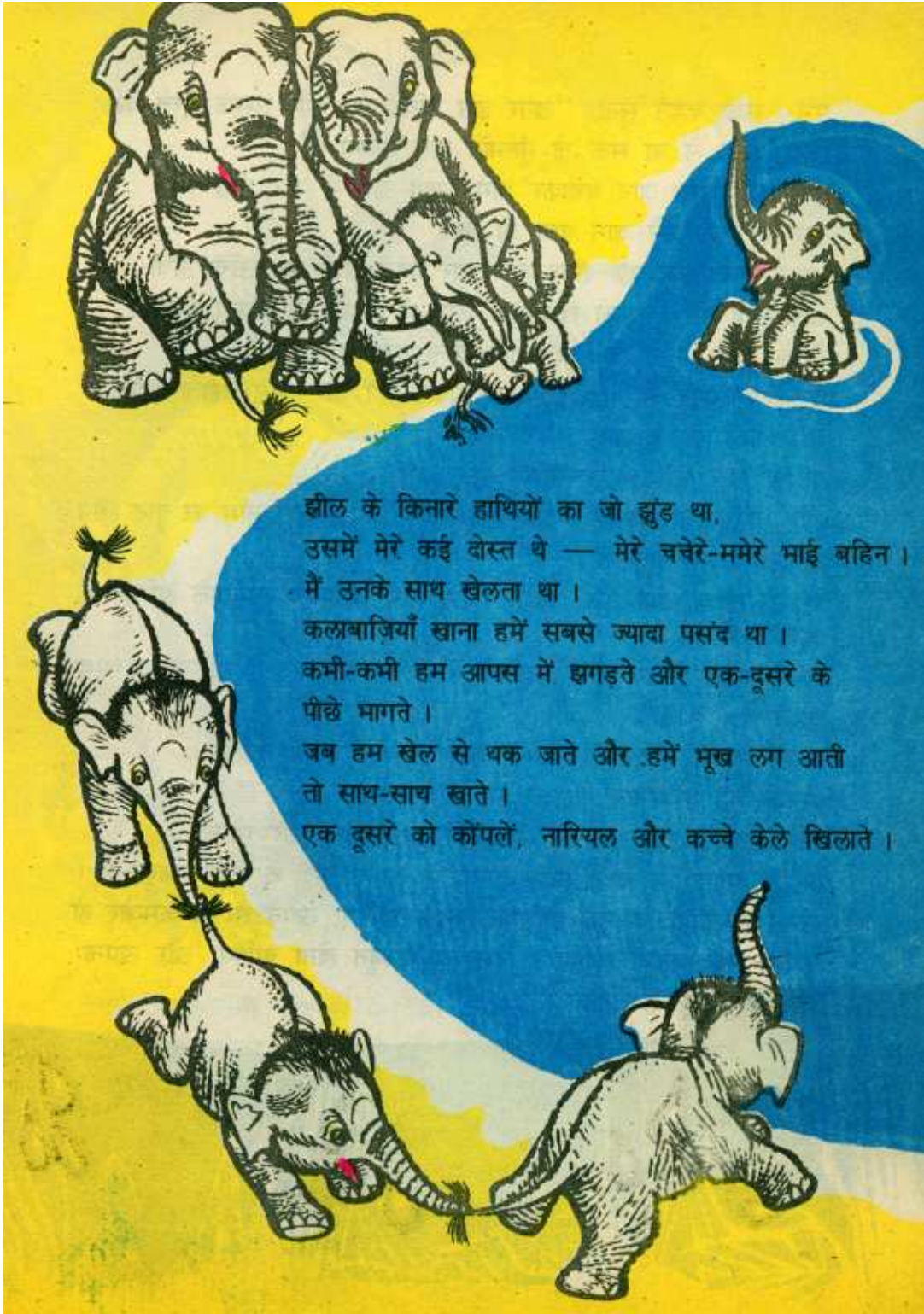
झील के किनारे हाथियों का जो झुंड था,
उसमें मेरे कई दोस्त थे — मेरे चचेरे-ममेरे भाई बहिन।
मैं उनके साथ खेलता था।
कलाबाज़ियाँ खाना हमें सबसे ज्यादा पसंद था।
कभी-कभी हम आपस में झगड़ते और एक-दूसरे के
पीछे भागते।
जब हम खेल से थक जाते और हमें भूख लग आती
तो साथ-साथ खाते।
एक दूसरे को कोंपलें, नारियल और कच्चे केले खिलाते।

फिर हम साथ-साथ गाते ।
और जब तक गला न बैठ जाता, गाते रहते ।
जल्दी ही हमारी माँओं को हम पर भरोसा होने लगा ।
अब वे कई-कई दिन के लिए हमें छोड़कर रिश्तेदारों के घर मिलने चली जातीं ।
इस तरह वर्ष पर वर्ष निकलते गये और मैं बड़ा हो गया ।
मेरी माँ ने मुझको तुषी मामा की देखरेख में रखा था ।
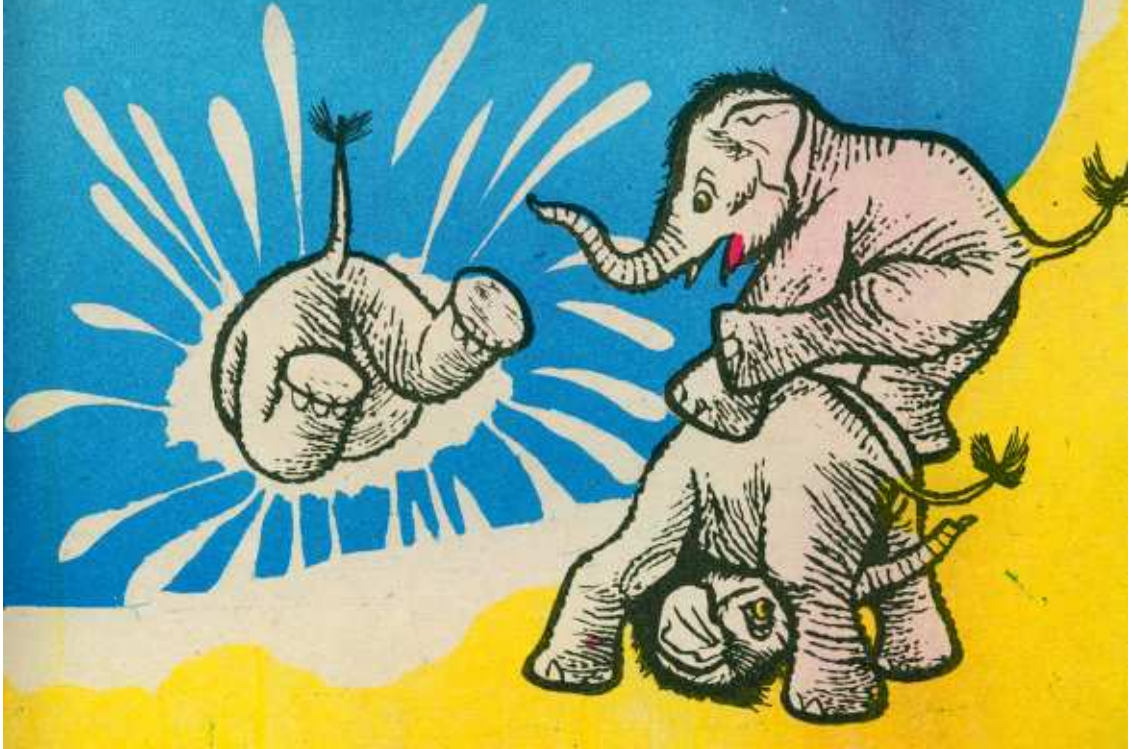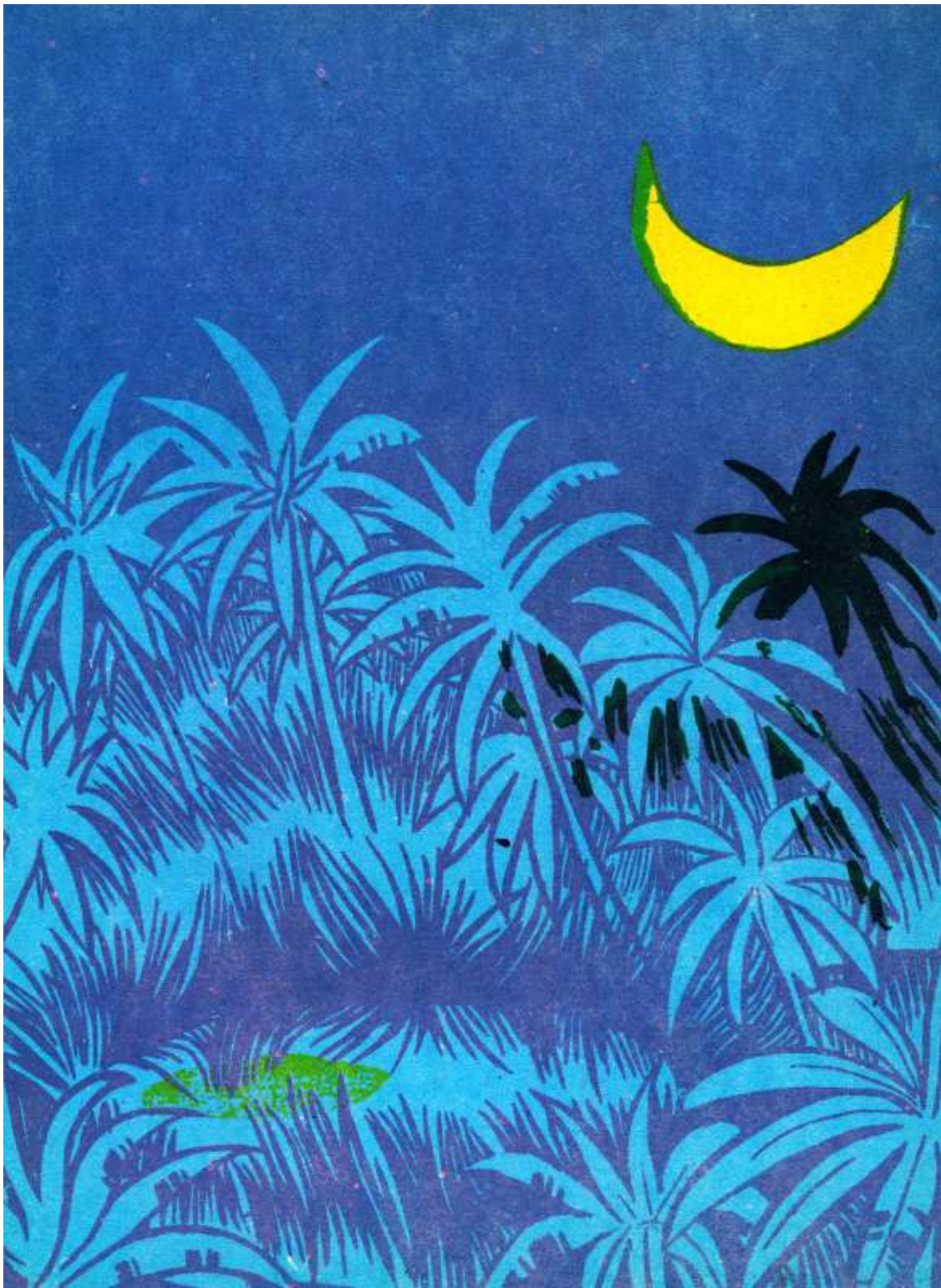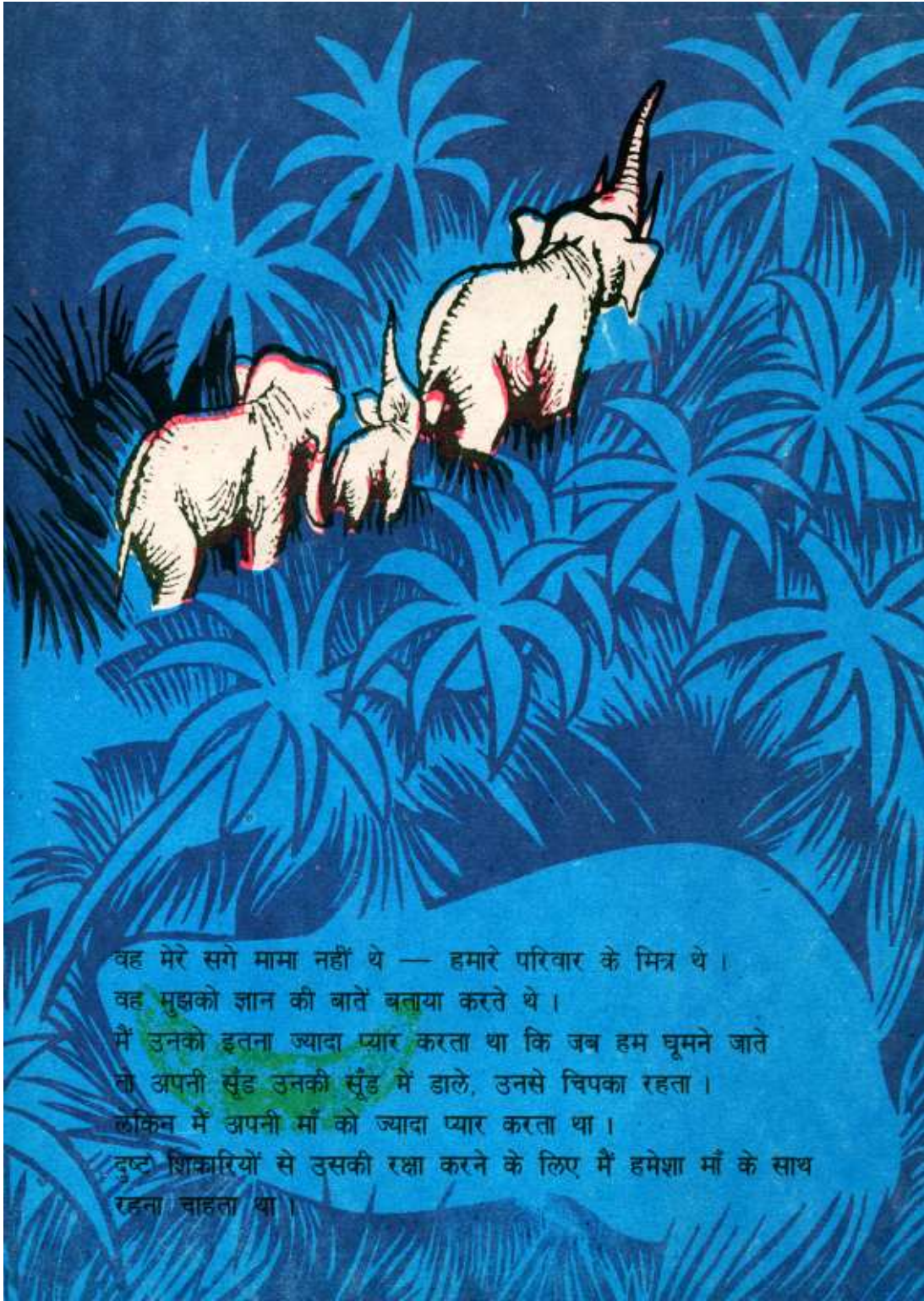
वह मेरे सगे मामा नहीं थे — हमारे परिवार के मित्र थे।
वह मुझको ज्ञान की बातें बताया करते थे।
मैं उनको इतना ज्यादा प्यार करता था कि जब हम घूमने जाते
तो अपनी सूँड उनकी सूँड में डाले, उनसे चिपका रहता।
लेकिन मैं अपनी माँ को ज्यादा प्यार करता था।
दुष्ट शिकारियों से उसकी रक्षा करने के लिए मैं हमेशा माँ के साथ
रहना चाहता था।

एक बार मैं माँ और तुषी मामा के साथ अपने चचेरे भाई की शादी में मैसूर जा रहा था।

हम मीलों चलते गये, चलते गये।

हम रात को ही यात्रा करते ताकि हमें कोई देख न पाये।

दिन को पहाड़ियों के बीच में छुप जाते। मुझको इस सैर में बड़ा मज़ा आ रहा था।

मैं इतना खुश था कि गाने को जी करता था, लेकिन माँ और तुषी मामा को डर था कि कहीं किसी शिकारी ने मेरी आवाज़ सुन ली तो खैर नहीं रहेगी। और जैसा उन्होंने कहा था वैसा ही हुआ। हम श्रीरंगपटनम् के बाहर पहुँच गये थे जहाँ टीपू सुलतान का पुराना महल है। माँ ने मुझको बताया था कि टीपू अंग्रेजों से किस बहादुरी से लड़ा था। उसका महल देखकर मुझसे रहा नहीं गया।

मैं जोर से गा उठा — टीपू! टीपू! टीपू!
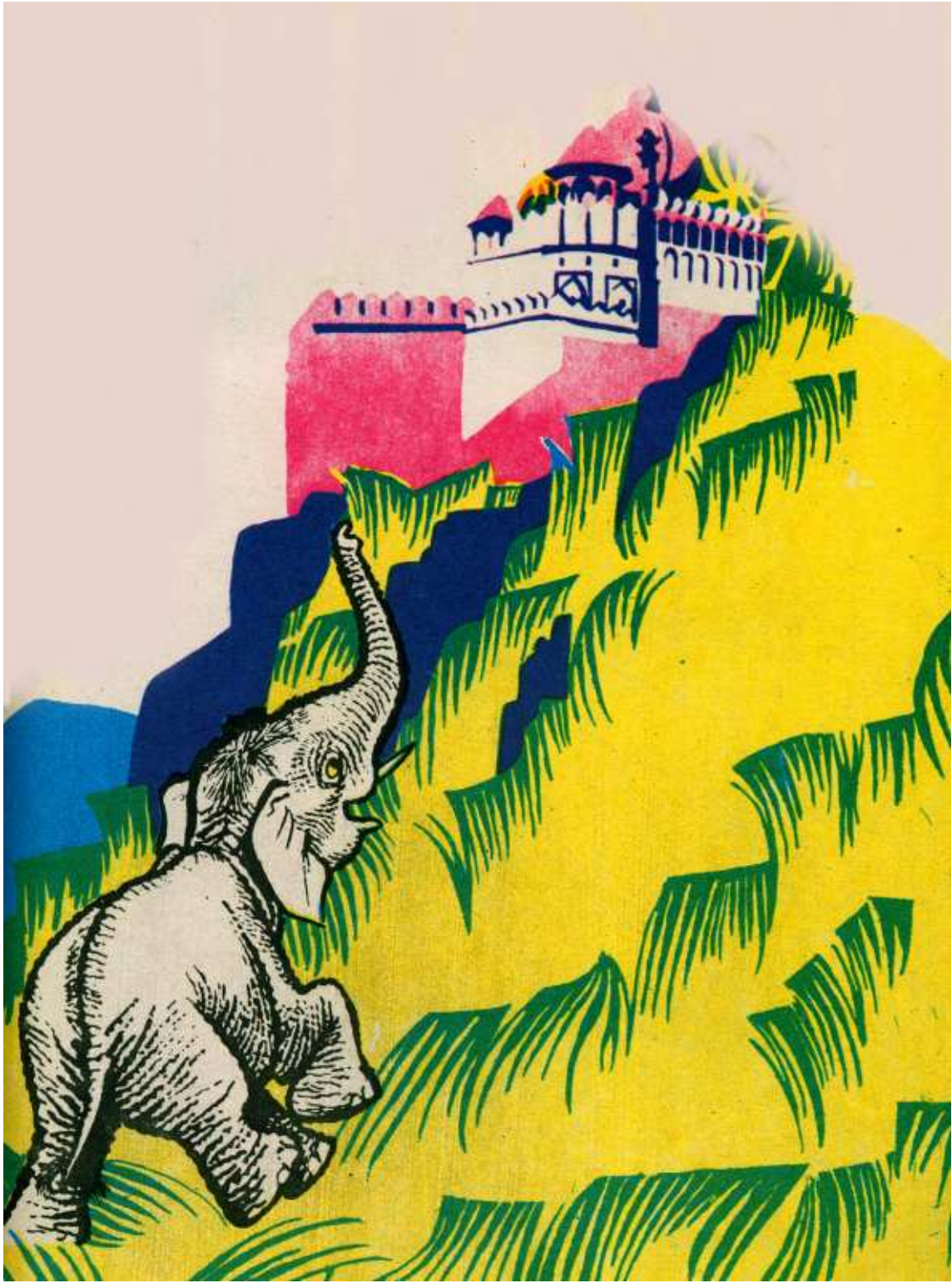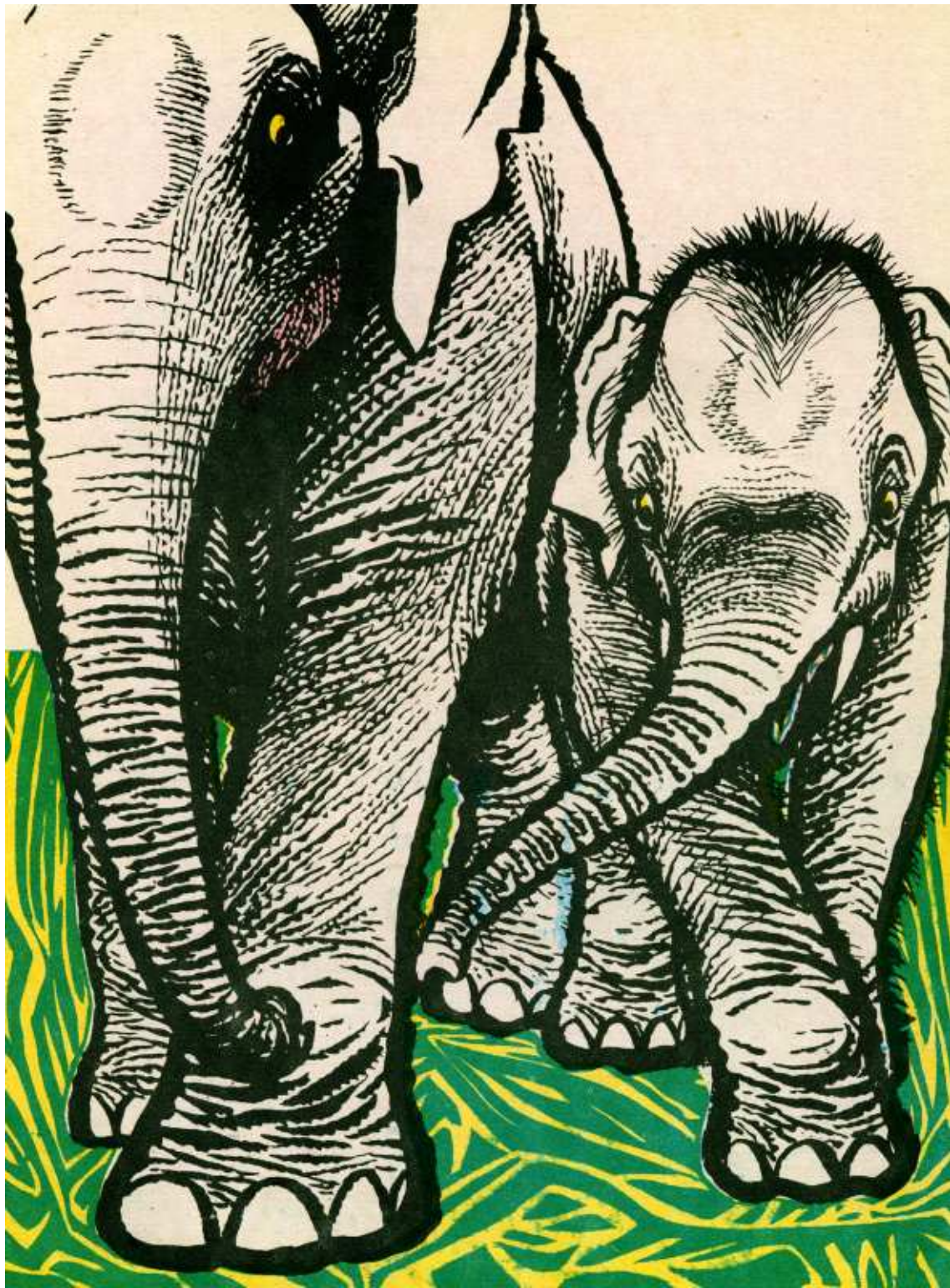
मेरा गाना ही आफत बुला लाया।
अचानक देखा कि सामने किश्ती जैसी टोपी पहने एक साँवला आदमी
एक हाथी की पीठ पर कसे हौदे में बैठा है।
उसके पीछे कुछ और शिकारी थे जो
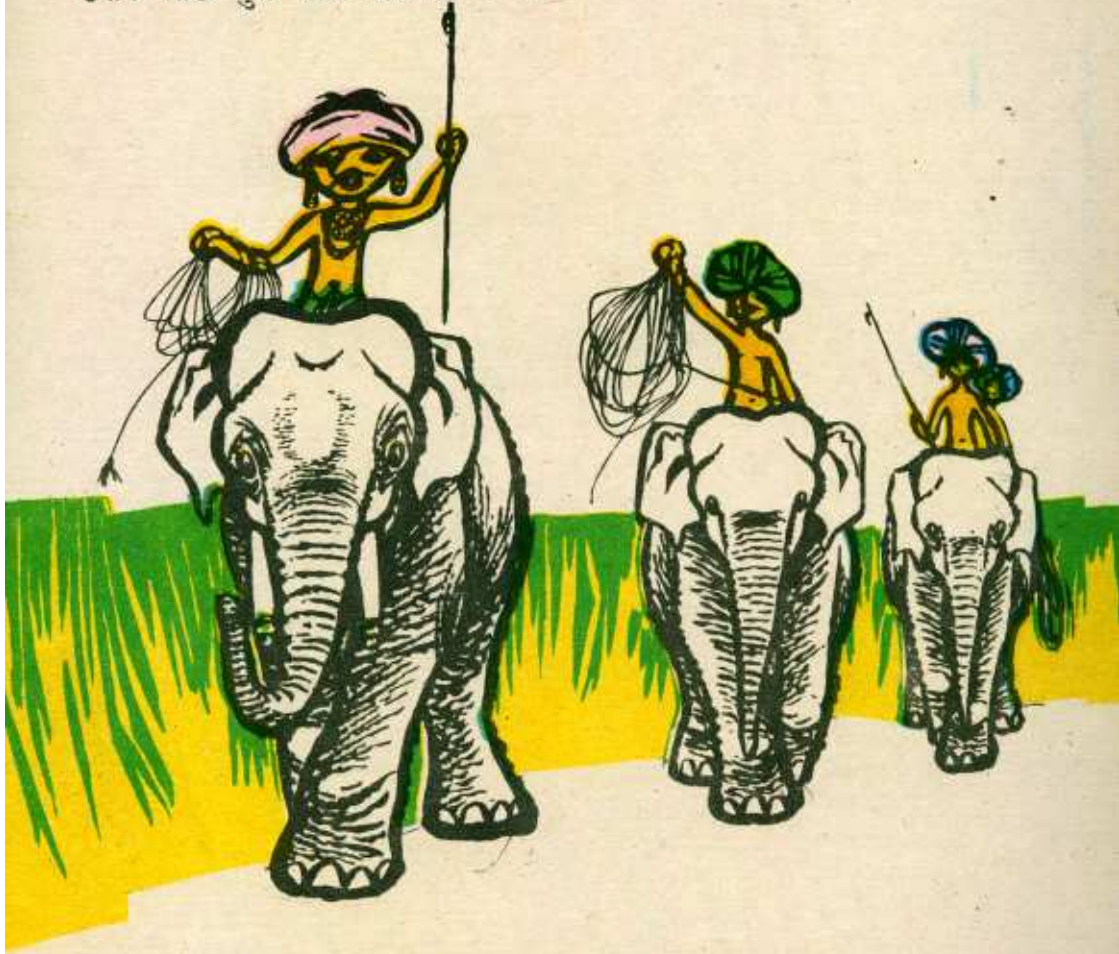
दूसरे हाथी पर सवार थे।
साँवला आदमी चिल्लाकर अपने आदमियों से कह रहा था,
"इन सबको जिंदा पकड़ लो। खासकर बच्चे को।
चिड़ियाघर के लिए इसकी ज़रूरत है।"
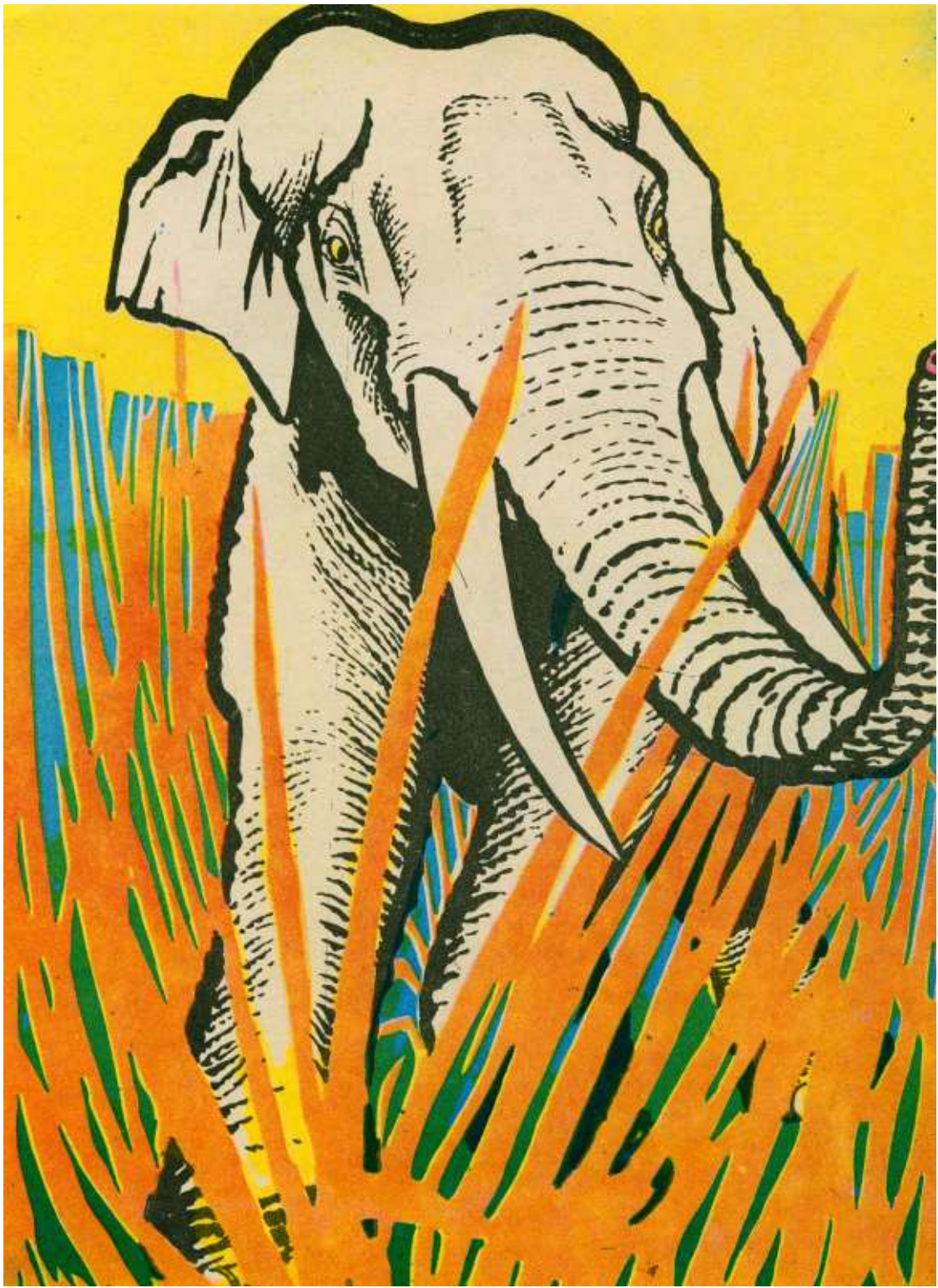
तुषी मामा और मैं एकदम पीछे मुड़ गये और झटपट टीपू के किले की दीवारों के साथ उगी झाड़ियों में घुस गये।
हमें पीछे शिकारियों की चीख-पुकार सुनायी दे रही थी।
वे हमारा पीछा कर रहे थे।
तुषी मामा मेरे आगे-आगे थे।
माँ मेरे पीछे थी।
मेरा जी करता था कि मैं दौड़कर मामा के आगे निकल जाऊँ।

पल भर को मैं माँ को
भूल गया और आगे दौड़ा।
फिर मुझको ख्याल आया कि बेचारी कितनी थकी और डरी हुई होगी।
मैं रुककर उसकी प्रतीक्षा करने लगा।
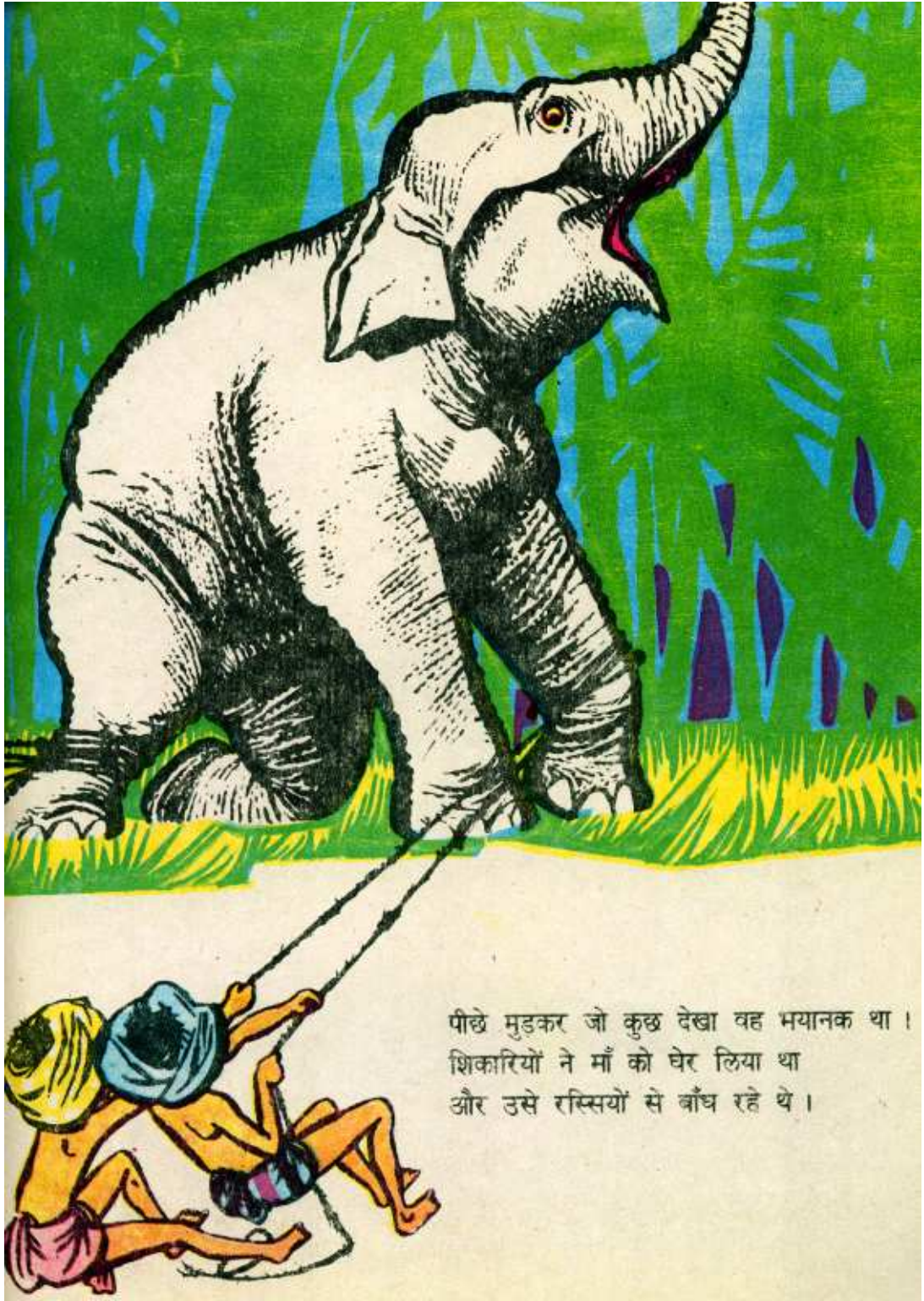
पीछे मुड़कर जो कुछ देखा वह भयानक था।
शिकारियों ने माँ को घेर लिया था
और उसे रस्सियों से बाँध रहे थे।

वह सूँड उठाकर चिल्ला रही थी, "मोरा, मोरा, मेरे बेटे!"
मुझसे रोया नहीं गया। जैसे मुझसे उस समय नहीं रोया गया था जब बरसों पहले उस गोरे शिकारी ने मेरे पिता को गोली से मार दिया था।
माँ की दिशा से आती हुई हर आवाज़ को सुनने के लिए मैं कानों को आगे-पीछे हिलाने लगा।
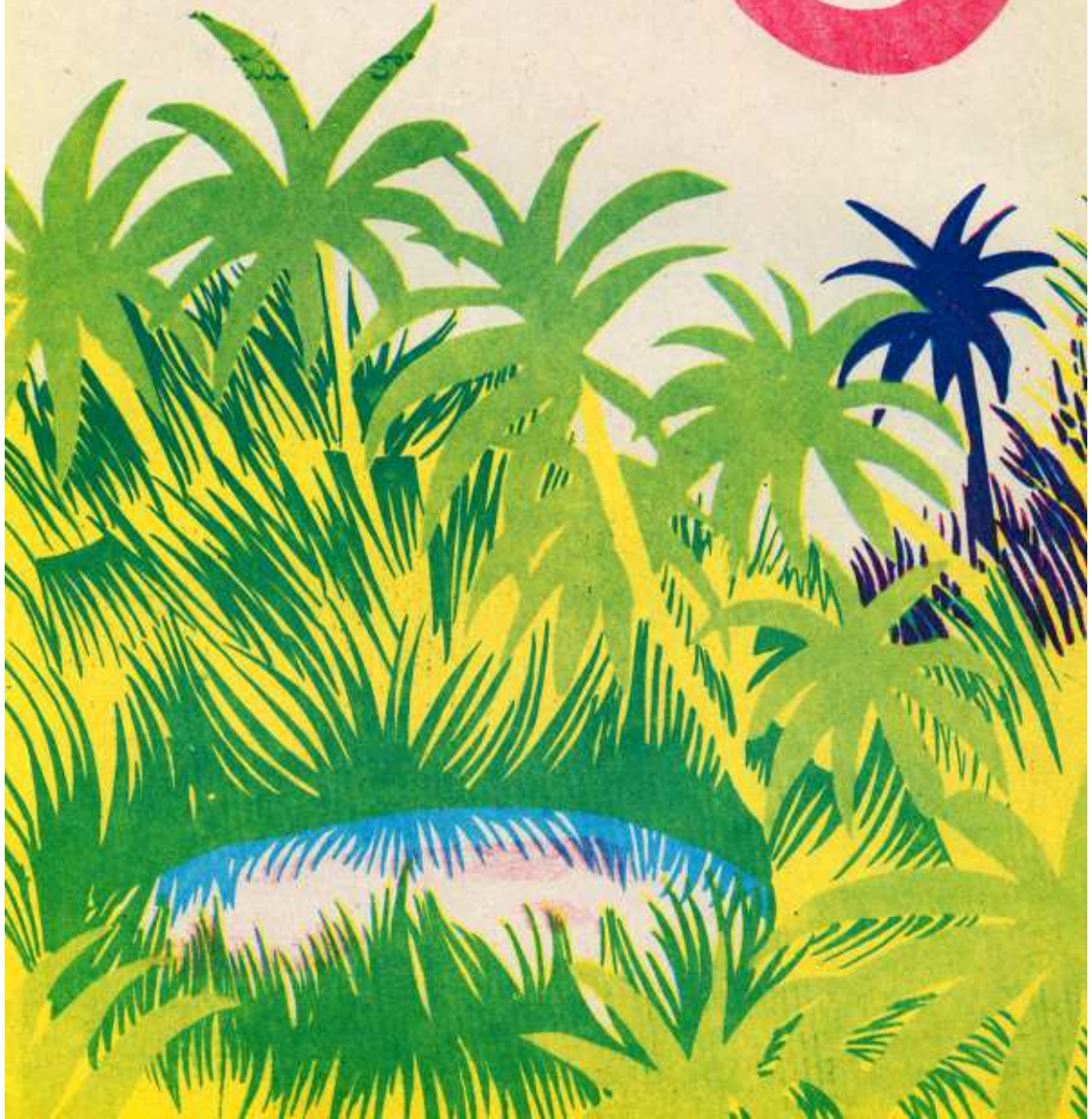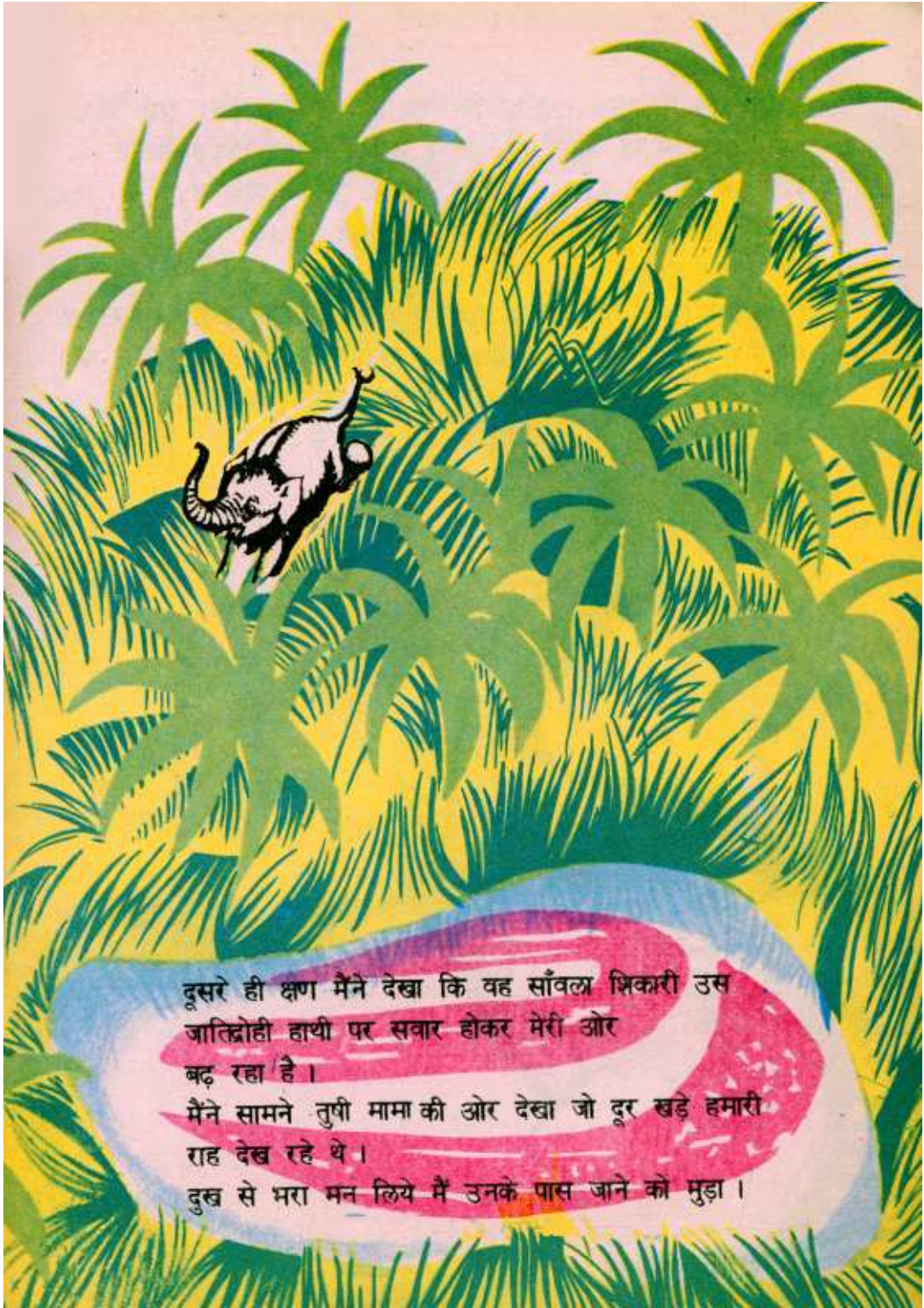
दूसरे ही क्षण मैंने देखा कि वह साँवला शिकारी उस
जातिद्रोही हाथी पर सवार होकर मेरी ओर
बढ़ रहा है।
मैंने सामने तुषी मामा की ओर देखा जो दूर खड़े हमारी
राह देख रहे थे।
दुख से भरा मन लिये मैं उनके पास जाने को मुड़ा।

मन ही मन मैं समझ गया था कि जब तक मैं बड़ा होकर रक्षा आप करने लायक न हो जाऊँ, हर आदमी मुझको शिकार बनाना चाहेगा ।
मैं चलता जा रहा था — घबराया, सहमा, लेकिन चौकन्ना।
सहसा आस-पास की लंबी घास में सरसराहट हुई ।
मैंने घूमकर देखा ।
तेंदुआ साबरा बैठा था — इस प्रकार दाँत निकाले मानो अभी फाड़ कर खा जायेगा । वह बंगलौर में नदी किनारेवाले हमारे घर अक्सर आ टपकता था ।
मुझको काँपते देख साबरा की हरी-हरी आँखें चमकने लगीं,
मानो वह कह रहा हो, "आखिर पकड़ ही लिया !
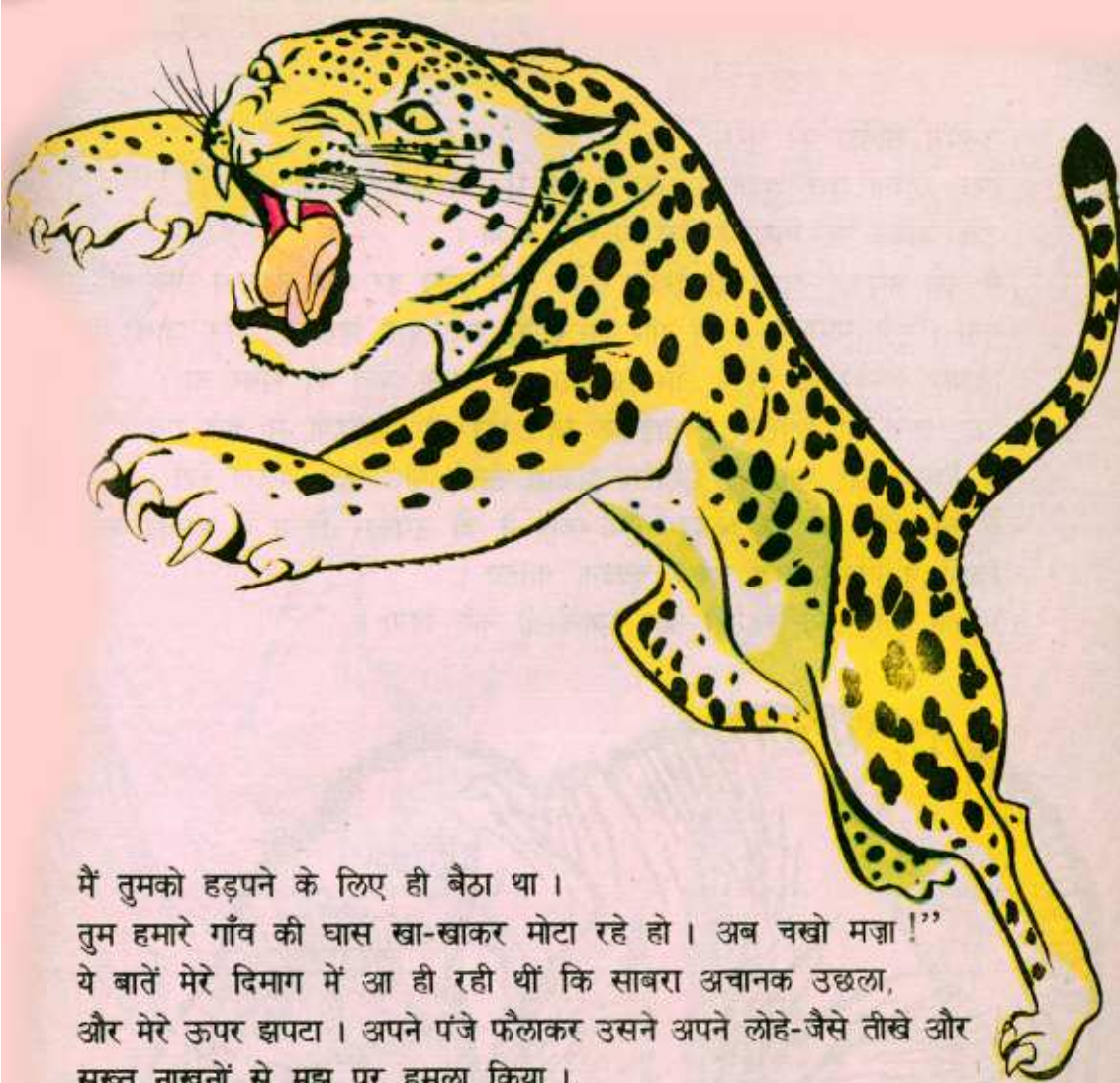
मैं तुमको हड़पने के लिए ही बैठा था।
तुम हमारे गाँव की घास खा-खाकर मोटा रहे हो। अब चखो मज़ा!"
ये बातें मेरे दिमाग में आ ही रही थीं कि साबरा अचानक उछला,
और मेरे ऊपर झपटा। अपने पंजे फैलाकर उसने अपने लोहे-जैसे तीखे और सख्त नाखूनों से मुझ पर हमला किया।
मैं डरकर चीख उठा और वहाँ से भाग जाने के लिए मुड़ा। लेकिन भागा नहीं
उसी जगह जमे रहकर मैंने अपनी सूँड से उसको ऐसे जोरों से मारा कि
साबरा मेरे सामने धम्म से गिरा।
लेकिन मैं अब भी काँप रहा था।
फिर झाड़ी में बड़ी डरावनी-सी आवाज़ हुई,
और मेरी आँखों के आगे
एक गहरे सलेटी रंग की दीवार-सी खड़ी हो गयी।
यह तुषी मामा थे, हाथियों के बहादुर सरदार!

उन्होंने साबरा को घूरा,
फिर अपना सिर झुकाकर उसे अपनी सूँड से पकड़ लिया।
उसे जमीन पर गिराकर पैरों से रौंद डाला।
मैं उस भंयकर लड़ाई को देखता रहा। मेरी आँखें डर और जोश से लाल हो गयीं। तुषी मामा ने अपने सारे शरीर को एक बार हिलाया, फिर जोरों से चिंघाड़ कर मानो धरती और आकाश को अपनी जीत की खबर दी।
फिर जीत की आखिरी चिंघाड़ के साथ धीरे-धीरे झाड़ियों में चले गये।
मैं विनय और कृतज्ञता से सिर झुकाये उनके पीछे-पीछे चलता रहा।
मैं सोच रहा था कि बहादुर तुषी मामा ने जो उपकार किया है उसका बदला किसी न किसी तरह जरूर चुकाना चाहिए।
लेकिन तुषी मामा ने मेरी ओर ध्यान भी नहीं दिया।
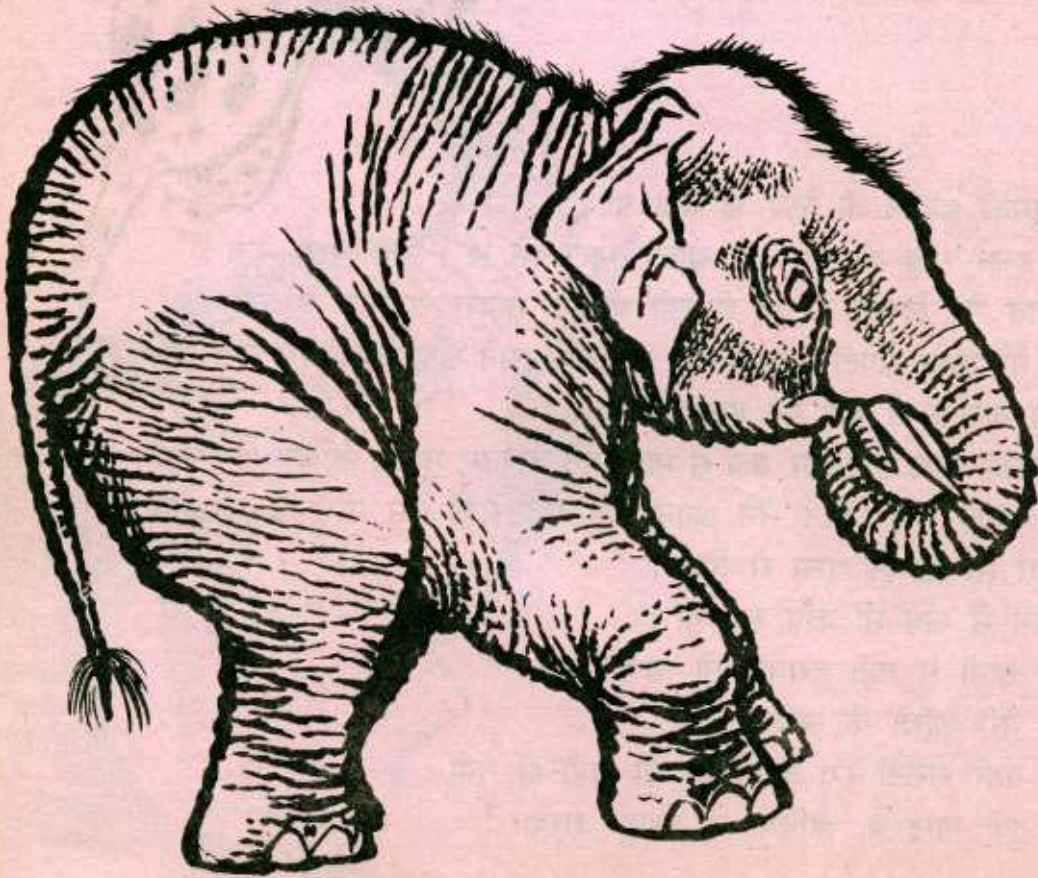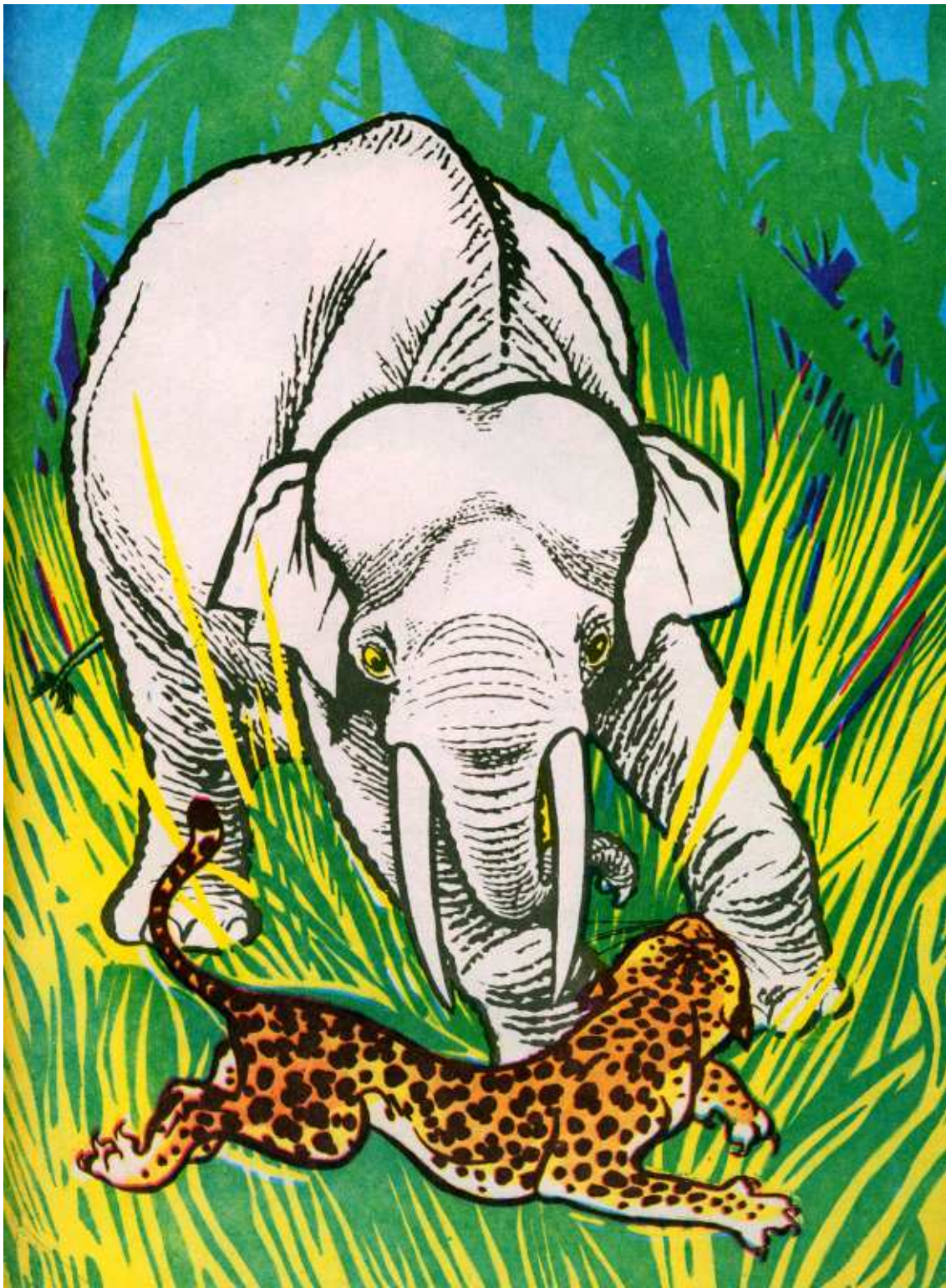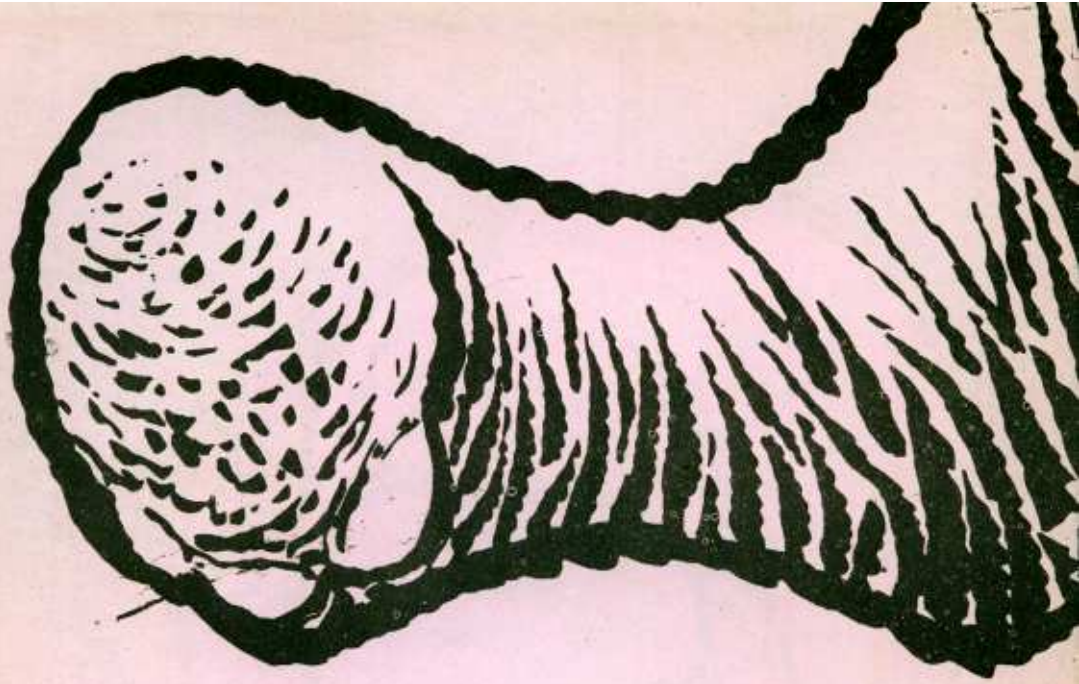
शायद वह मेरी माँ की बात सोच रहे थे। माँ का पकड़ा जाना शायद उनसे सहा नहीं जा रहा था।
वह आगे बढ़ते गये। एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा।
फिर अचानक आकाश को फाड़नेवाली, गुस्से से भरी चिंघाड़ के साथ मेरी आँखों से ओझल हो गये। मैं भी आगे बढ़ा।
मैं अपने रक्षक को ढूँढ़ने के लिए बेचैन था
मेरे सामने लंबी-चौड़ी, खुली जगह थी।
मुझको नीचे खाई में पड़े तुषी मामा के विशाल शरीर की झलक दिखायी दी। वह खाई में गिर पड़े थे। वह गुस्से से चिंघाड़ रहे थे और अपने पैर पटक रहें थे। मैं लाचार-सा खड़ा था।
मुझको समझ में नहीं आ रहा था कि हाथियों की दुनिया के हम आज़ाद लोगों के लिए आदमी इस प्रकार जाल क्यों बिछाता है।
उन्हें अपने काबू में क्यों करना चाहता है?
भाग्य से हाथी को पकड़ने के लिए आदमी आमतौर से जो जाल बिछाया करते हैं, वह वहाँ नहीं था।
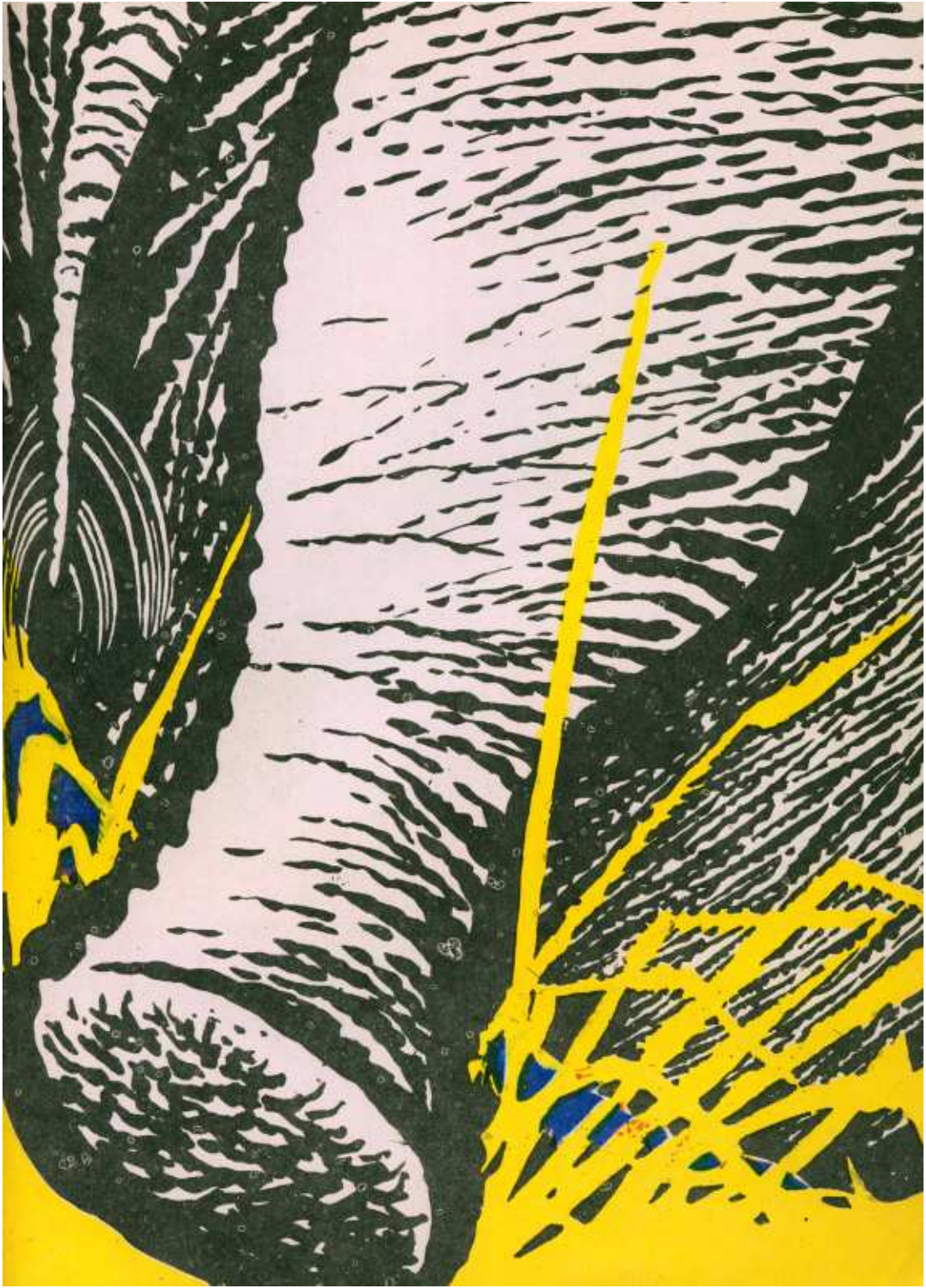
सिर्फ एक कामचलाऊ जाल था।
भारी-भरकम तुषी मामा को उससे जरा भी चोट नहीं आयी।
मैं इधर-उधर सूँड मारता रहा, और सोचता रहा कि तुषी मामा को
खाई से बाहर निकालने का क्या उपाय करूँ?
काश, मेरे खूब लंबे-लंबे दाँत होते जिससे मैं खाई की दोनों दीवारों को
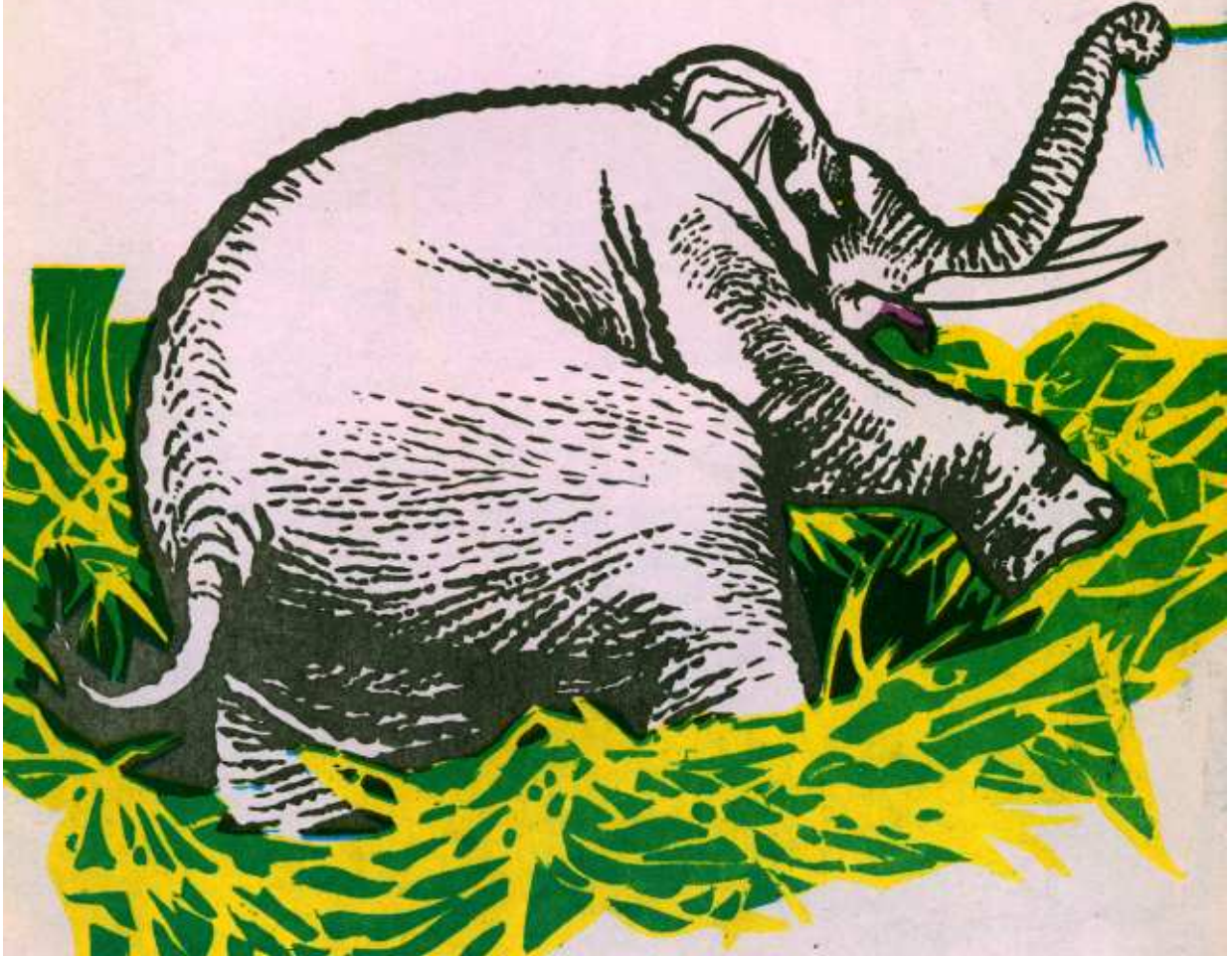
खोद डालता। अचानक मुझको एक तरकीब सूझी।
मैंने एक पौधा उखाड़ लिया और उसे खाई में फेंक दिया।
मैंने सोचा शायद वह कुछ काम आये।
पौधा तुषी मामा के सिर में लगा।

गुस्से से गरज कर उन्होंने उसे अपनी सूँड में उठा लिया, फिर चारों ओर घुमाया और अपने पैरों तले कुचल दिया।
मैं कुछ देर तक खाई के किनारे-किनारे घूमता रहा।
अचानक मुझको सूझा कि कम से कम इसका उपाय तो कर सकता हूँ कि तुषी मामा को कैद में भी कुछ आराम मिले।
टहनियों और पौधों के बिस्तर पर उन्हें आराम मिलेगा।
बाद में मैं उन्हें खाई से बाहर निकालने की कोशिश करूँगा।
बस, मैं पौधे उखाड़-उखाड़ कर खाई में फेंकने लगा।
पौधों की इस बौछार पर बूढ़े हाथी को बहुत गुस्सा आया।
उन्होंने उन्हें अपने बड़े-बड़े तलुओं के नीचे खूब रौंदा और गुस्से से चिंघाड़ने लगे।
अब खाई का मूँह उनके कुछ करीब आ गया था।
करीब एक घंटे बाद उनके दाँत जमीन तक पहुँच गये थे।
धीरे-धीरे उनकी मजबूत सूँड भी जमीन के ऊपर दिखने लगी।

फिर तुषी मामा ने अपने-आपको ऊपर उठाया।
अपने भारी दाँतों और सूँड को उठाते हुए वह उठ खड़े हुए।
अब उनके चारों पैर धरती पर जमे थे।
फिर सारा बल लगाकर वह खाई से बाहर आ गये।
बोले, "तुम जरा से बच्चे, मुझको खाई से बाहर निकालने का यह उपाय तुमको कैसे सूझा?"
मैंने केवल उनके विशाल चेहरे की ओर देखा और सोचा कि अगर माँ तुषी मामा की यह बात सुन पाती तो कितनी खुश होती।
"मैं आपकी पूजा करता हूँ," मैंने तुषी मामा से कहा, "और आपकी तरह बहादुर और बलवान बनना चाहता हूँ।"

"मोरा, मेरे बेटे !" तुषी मामा ने कहा, "मुझको भी दुनिया में बिल्कुल अकेला छोड़ दिया गया था ।
शिकारी लोग मेरे माँ-बाप को केरल के लकड़ी के गोदामों में काम कराने के लिए पकड़ ले गये थे । तुम्हारे पिता के मरने के बाद
मैंने देखा कि तुम्हारी माँ तुम्हारी देखभाल नहीं कर सकेगी ।
औरतों और बच्चों की देखभाल करने की जरूरत होती है ।
लेकिन हम मर्दों को तो काम करना होता है ।
हाथी जाति की आज़ादी की रक्षा करने का भार भी हम पर है ।
मैंने तुम्हारे पिता जी की जगह ले ली । लेकिन अब तो तुम सब कुछ सीख गये हो ।
जिस चालाकी से तुमने मुझको खाई से बाहर निकाला उससे पता चलता है कि तुम बड़े-बड़े काम करोगे और हमारी पंचायत्त के मुखिया बन जाओगे ।

जाओ बेटा अब सारी धरती की सैर करो — समुद्रों को पार करो।
और फिर
अपने झुंड में वापस आ जाओ।"
मैंने सोचा, "कितना महान हाथी है।
कितना बुद्धिमान, और मुझको कितना प्यार करता है।"
मैं चाहता था कि जहाँ तुषी मामा जायें, वहीं मैं भी जाऊँ।
लेकिन साथ ही मैं आजाद भी रहना चाहता था।
आज़ादी से घूमना-फिरना चाहता था।
अपनी देख-भाल खुद करना चाहता था।
अब मैं बडा जो हो गया था।
तुषी मामा चले गाय।
मैं सोच में डूबा उनको देखता रहा,
फिर दूसरी दिशा में चल दिया।